

क्या परमेश्वर है? हां, वरना हम

संसार की व्यवस्था

की व्याख्या कैसे कर सकते हैं

विभिन्न भागों के सावधानीपूर्वक प्रबन्ध में, जो संयोग से सम्भव नहीं है, संसार के पीछे एक सक्षम दिमाग दिखाई देता है। संसार की रचना में आकस्मिकता नहीं बल्कि व्यवस्था दिखाई देती है। यह सुव्यवस्थित है, अव्यवस्थित नहीं।¹ इससे प्रमाणित होता है कि इसकी योजना बनाई गई थी, और इसकी योजना बनाने वाला भी अवश्य कोई है। बिना दिमाग के प्रबन्ध नहीं हो सकता। इसलिए परमेश्वर पर विश्वास करना (कारण-कार्य सम्बन्ध के आगे) मानने का दूसरा बड़ा कारण प्रबन्ध ही है।

वर्णमाला के अक्षर

जूस का डिब्बा खोलने पर जब उसमें से वर्णमाला के अक्षर मिलें,² तो मानना ही पड़ेगा कि उन्हें किसी ने बनाया होगा। ऐसी सम्भावना नहीं है कि उस सामग्री को कड़ाही में उंडेलने पर वर्णमाला के वे अक्षर किसी कविता या भजन 23 का रूप ले लें। वर्णमाला के अक्षरों को कविता का रूप देने से पहले मानसिक शक्ति की आवश्यकता पड़ेगी जिसे कड़ाही में पकाया नहीं जा सकता। इसके लिए योजना, बुद्धि व तरतीब देने वाले का होना आवश्यक है। इसी प्रकार, एक शब्दकोश या टेलीफोन डायरेक्ट्री में दिए गए वर्णमाला के अक्षर या अंक छपाई की किसी दुकान पर किसी विस्फोट से ही नहीं जुड़ गए थे।

धातु के टुकड़े

धातु के टुकड़ों से घड़ी बनाने की बात पर डेविड ह्यूम के आक्रमण में, प्रबन्ध के तर्क की शक्ति को देखा जा सकता है। ह्यूम ने माना कि बिना आकार या रूप में “धातु के कई टुकड़ों” को एक जगह फँकने से, “घड़ी नहीं बन पाएगी,” और “मनुष्य के मस्तिष्क” के बनने लिए ऐसी ही क्रिया की आवश्यकता है। परन्तु, उसका तर्क था कि “मस्तिष्क की छोटी सी हलचल जिसे हम विचार कहते हैं” इतना गौण और दोषपूर्ण है कि इसे सृष्टि की रचना करने वाले दिमाग की तरह इस्तेमाल नहीं किया जा सकता।³ यदि घड़ी को बनाने के लिए मनुष्य के दिमाग का विचार आवश्यक है, चाहे वह कितना भी महत्वहीन तथा दोषपूर्ण क्यों न हो, तो सृष्टि की रचना के पीछे कितना बड़ा दिमाग होगा!

मानवीय देह

किसी कैमिस्ट ने मानवीय देह बनाने के लिए चौंसठ तत्वों को आपस में मिलाया। वे चौंसठ तत्व संयोग से नहीं बल्कि विभिन्न प्रणालियों (कंकाल, मांसल, श्वास नालियां, रक्त प्रणाली, पाचक, खपाने, प्रजनन) में काम करते हैं, जो आश्चर्यजनक ढंग से जटिल हैं। और बड़ी सावधानीपूर्वक एक दूसरे से समन्वय करते हैं। किसी ने इस एक देह में एक हज़ार मील रक्त वाहिकाएं, पसीने की 15 लाख ग्रन्थियां, फेफड़ों के 70 करोड़ सैल, नाड़ी की 30 खरब कोशिकाएं, 30 लाख श्वेताणु, 18 हजार खरब रक्ताणु तथा और भी बहुत कुछ डाला है।

ऐसे व्यक्ति से जो यह सोचता है कि वे चौंसठ तत्व यूं ही अस्तित्व में आए, इकट्ठे हुए, और ऐसे जुड़ गए कि उनसे गली में घूमने वाला एक आदमी बन गया, बहस करना कठिन होगा। एक विचित्र पद में, डेविड ह्यूम ने एक यूनानी चिकित्सक (गलेन) जो पहले नास्तिक था और मानवीय देह में अपनी खोज के कारण विश्वासी बन गया था, से सीखी बात बताई थी। ह्यूम ने कहा कि चालीस से अधिक “विलक्षण उद्देश्यों के लिए 284 हड्डियों की गणना कौशल का एक अद्भुत प्रदर्शन” बन जाता है। ह्यूम ने कहा कि “अंगों के इतने शानदार ढंग से लगाए जाने की संख्या और जटिलता के अनुपात में” त्वचा, स्नायु और नसों पर विचार करने पर वह और भी आश्चर्यचकित हो गया! उसने छह सौ विभिन्न मांसपेशियों पर ध्यान दिया, “प्रत्येक को 6000 [से अधिक] उद्देश्यों के लिए बड़ी ही समझदारी से लगाया गया” है। फिर मस्तिष्क पर विचार किया! गलेन की व्याख्या से ह्यूम इतना प्रभावित हुआ कि इस नास्तिक ने स्वयं कहा, “इतनी बड़ी बुद्धि पर अब किसे संदेह हो सकता है?” ह्यूम पर दया आती है, क्योंकि विश्वासी होने के इतना निकट आने के बाद, वह फिर से संदेह में जा गिरा।¹

मानवीय देह में सावधानीपूर्वक प्रबन्ध के दूसरे उदाहरणों में इसके प्रोटीन आते हैं और ये किसी भी प्राणी की प्रत्येक प्रजाति में भिन्न हैं। “देह का हर किस्म का सैल, हर अंग, अपनी ही प्रकार के विशेष प्रोटीनों से बना है और यह जीवित वस्तु की प्रत्येक प्रजाति में अलग होते हैं।” ये प्रोटीन अमीनो खारों से बने होते हैं। प्रोटीन सैल की प्रत्येक किस्म दूसरों से केवल बीस अमीनो खारों से अलग होती है। प्रत्येक जीवन देह के प्रत्येक अंग के लिए सही किस्म का प्रोटीन बनाने के लिए उन खारों के सही संयोजन पर निर्भर करता है। “उन प्रोटीनों द्वारा अपनाए जाने वाले सम्भावित आकारों की संख्या इतनी विशाल हो सकती है कि गणित का जानकार यह निष्कर्ष निकाल सकता है कि आंकड़ों के हिसाब से जीवन पूरी तरह से असम्भव है।” हार्मोन की औषधि (इन्सुलिन) उस साधारण से प्रोटीन का केवल एक भाग है। हार्मोन इन्सुलिन सोलह खारों “अन्य सम्भावित ढांचों की बहुत बड़ी संख्या को ... नकार देती है, जिन्हें यह उसी अनुपात में लेती है” सम्भावित प्रबन्धों की कुल संख्या “छह” के साथ 59 शून्य है। इनमें से केवल एक सम्भावना ही हार्मोन इन्सुलिन बनाती है।²

खगोलीय नियम

प्लेटो का कहना था कि “ऋतुओं का समय पर आना, और उनका वर्षों और महीनों में बंटे होना” देवताओं के होने के “प्रमाण हैं।”⁶ “बोने और काटने के समय, सर्दी और गर्मी, धूप और शीतकाल, दिन और रात” (उत्पत्ति 8:22) की निरन्तरता का कारण बताने के लिए नियम देने वाले का होना आवश्यक है।

1682 में एडमंड हेली नामक एक अंग्रेज़ शाही खगोलशास्त्री, ने धूमकेतू के मार्ग का पता लगाया। खगोलीय नियम में अपने विश्वास के कारण उसने भविष्यवाणी की कि धूमकेतू तारा लगभग हर 76 वर्ष के बाद फिर दिखाई देगा। 1742 में उसकी मृत्यु हो गई, परन्तु तब से चार बार (1758, 1835, 1910, और 1986) हेली का धूमकेतू देखा गया है।

पर्सिवल लोविल नामक एक अमेरिकी खगोलशास्त्री ने इस पूर्ण विश्वास के साथ कि ग्रह नियम में बंधे हैं, इतनी दूर एक ग्रह के होने की भविष्यवाणी की कि उसे सूर्य का चक्कर लगाने में 248 वर्ष का समय लग जाता है। फ्लेगस्टाफ, अरिजोना में 1905 से 1916 तक निराश होकर अपनी मृत्यु के समय तक वह आकाश में अपनी दूरबीन से खोज करता रहा। फ्लेगस्टाफ में लोविल के निरीक्षण से 1930 में क्लाइड डब्ल्यू. टॉमबॉग ने पहली बार इस ग्रह को देखा और इसे प्लूटो नाम दिया।

1504 में जमायका के स्थानीय लोगों पर अधिकार पाने के लिए क्रिस्टोफर कोलम्बस ने प्राकृतिक नियमों की विश्वसनीयता का इस्तेमाल किया था। जमायका के टापू पर, कोलम्बस ने वहां के लोगों को उसका सहयोग न करने के कारण धमकी दी “कि, यदि वे शत्रुता के कारण उसका विरोध बन्द नहीं करते, तो चांद अपना प्रकाश नहीं देगा। (उसे रिजियोमोन्टेनुस के खगोलीय कैलेंडर से पता चल गया था कि 29 फरवरी 1504 को पूर्ण चन्द्रग्रहण लगने वाला है।) इस भविष्यवाणी के पूरा होने से वहां के लोगों की समस्या सुलझा ली गई।”

आकाशों के सम्बन्ध में, यहूदी दार्शनिक ज्यूडियास फिलो (लगभग 20 ई.पू. - 50 ई.) का कहना था कि “संयोग के लिए कोई स्थान नहीं है,” बल्कि “सब कुछ निश्चित तौर पर स्थिर, अटूट नियमों के अनुसार होता है।”⁸ ह्यूम ने आपस में सम्बन्ध रखने वाले इन नियमों के पीछे एक महान परमेश्वर को देखने के बजाय, तीस हजार देवताओं के होने या “देवताओं के एक असंख्य समाज” के होने का सुझाव दिया। परन्तु सृष्टि की इतनी निकट एकता के कारण हमें सोचने पर मजबूर करता है कि एक ही दिमाग इन सबको चला रहा है। खण्डन के लिए ह्यूम की बात में इस तर्क का अखण्डनीय स्वभाव दिखाई देता है। ब्राह्मण लोग एक बहुत बड़ी मकड़ी की बात करते हैं जिसने अपने पेट से इस सृष्टि को बुना। ह्यूम का तर्क था कि “एक संतोषजनक कारण देना कठिन होगा” कि “इतना क्रमबद्ध सिस्टम दिमाग के साथ-साथ पेट से क्यों नहीं बुना जा सकता।”⁹

चांद की यात्राएं गणित तथा मशीनों में प्रकृति के नियमों की विश्वसनीयता के कारण ही सफल हो पाई हैं। 5 फरवरी 1971 को *अपोलो 14* के दल अर्थात एलन बी. शैफर्ड, एडगर डी. मिचेल, और स्टुअर्ट रूसा छह दिन की उड़ान के बाद चांद पर फ्रा माउरो नामक

स्थान पर सफलतापूर्वक उतरे थे। मशीन में होने वाली किसी भी प्रकार की थोड़ी सी खराबी भी उनकी उड़ान में बाधा डालकर इन अंतरिक्ष यात्रियों की मृत्यु का कारण बन सकती थी (एक ऑक्सीजन टैंक में विस्फोट होने से *अपोलो 13* के दल के सदस्यों की मृत्यु होने से मिशन असफल हो गया था)। कमांडर शैपर्ड का कहना था कि *अपोलो 14* के अंतरिक्ष यात्रियों ने “यह गलती नहीं की।” परन्तु एक बात जिसकी इन अंतरिक्ष यात्रियों को कोई चिंता नहीं थी, अंतरास सितारे से आने वाले प्रकाश की विश्वसनीयता थी, जिससे वे फ्रा माउरो की ओर आगे बढ़ सकते थे। अंतरास स्कोर्पियो नामक एक दक्षिणी तारामण्डल में हमारे सूर्य से दो सौ गुणा बड़ा, सबसे अधिक महत्व का लाल तारा है। यह पृथ्वी से दो करोड़ संख (2,17,03,07,52,00,00,000) मील दूर है; 5 फरवरी 1971 ई. को इन अंतरिक्ष यात्रियों की आंखों में पड़ने वाली रोशनी अंतरास से 370 वर्ष पूर्व अर्थात् 1601 ई. में निकली थी। अंतरिक्ष के इस छोटे से बिन्दु में निकलने वाले प्रकाश से, न केवल इन अंतरिक्ष यात्रियों को चांद पर जाने के लिए मार्गदर्शन मिला, बल्कि इसकी सहायता से वे चांद पर उसी जगह उतरे जहां वे उतरना चाहते थे। *अपोलो 14* की उड़ान की तैयारी करने वाले खगोलशास्त्रियों और गणितज्ञों को मालूम था कि उन्हें खगोलीय नियम के सही होने पर निर्भर रहना पड़ सकता है, और इन लोगों ने इतने ही विश्वास से अपने प्राण जोखिम में डाल दिए। यदि प्रकृति के नियम स्थिर न होते, जैसा कि मनुष्य तर्क देता था, तो अंतरिक्ष यात्री न तो चांद पर पहुंच सकते थे और न ही चांद की यात्राएं करके सुरक्षित वापस आ सकते थे।

बीसवीं शताब्दी के “नया भौतिक विज्ञान” (परमाणुओं के अन्दर पाए जाने वाले इलैक्ट्रॉनों की हलचल के सम्बन्ध में अनिश्चितता के हेसन्बर्ग के सिद्धांत पर आधारित) को परमाणुओं में स्पष्ट अनियमितता मिलती है। दूसरे सब भागों में प्रकृति के अपरिवर्तनीय नियमों से (मनोविज्ञान को छोड़कर), यह अधिक अच्छा होगा यदि भौतिक विज्ञानी जल्दबाजी में निर्णय लेने से बचें। सत्य तो यह है कि परमाणुओं में अनियमितता नहीं पाई जाती। शिकागो के निकट एटोमिक अनर्जी कमीशन की प्रयोगशाला में कार्यरत एक भौतिक विज्ञानी, डॉ. जॉन एच. मार्टिन (आर्गोन नेशनल लेबोरेट्री) का कहना है कि उप परमाणु कण “भौतिक नियम के नये लगने वाले क्रम को दर्शाते हैं, परन्तु एक नियम जो क्रमबद्ध है ... वे क्रमबद्ध ढंग से ही क्रिया और प्रतिक्रिया करते हैं।” एक इलैक्ट्रॉन “को एक ही समय में दो विभिन्न स्थानों में से गुजारा जा सकता है।” प्रकृति के हमारे ज्ञान के अनुसार, यह नियम के विरुद्ध है, परन्तु स्पष्टतः यह इलैक्ट्रॉनों का नियम है।¹⁰

सारांश

प्रकृति की तर्कशक्ति मनुष्य की तर्कशक्ति से आगे होनी थी, और कोई तर्कशक्ति बिना पूर्वबुद्धि के सम्भव नहीं है। न तो मनुष्य की और न ही ईश्वरीय तर्कशक्ति दिखाई देती है, परन्तु इसकी वास्तविकता पर संदेह नहीं किया जा सकता।

प्रबन्ध की व्यवस्था से तर्क इस प्रमाण पर आधारित है कि एक बड़ा गणितज्ञ और

भौतिक विज्ञानी इस सृष्टि के पीछे है और इस शताब्दी में इसका प्रमाण प्लेटो के समय में उपलब्ध प्रमाण से भी अधिक विश्वसनीय है।

पाद टिप्पणियां

¹यशायाह 45:18 देखिए। अव्यवस्था उस स्थान को कहा जाएगा “जिसमें एक समान घटनाएं कभी नहीं घटीं, किसी की पुनरावृत्ति नहीं हुई, विश्वव्यापी कुछ नहीं हुआ, स्थिरता का कोई सम्बन्ध नहीं, वस्तुओं का स्थिरता के साथ कोई सम्बन्ध नहीं” (एफ. आर. टेनेट, *फिलॉसॉफिकल थियोलॉजी* [कैम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रेस 1956], 2:60)। ²कई जगहों पर, कई बार पास्ता को वर्णमाला के अक्षरों की तरह काट कर सूप बनाया जाता है। ³*ह्यूम सिलेक्शन* सम्प. चार्ल्स डब्ल्यू. हेंडेल जूनीयर (न्यूयॉर्क: चार्ल्स स्क्रिबनर 'स सम्प, 1955), 308-9 में डेविड ह्यूम, “द डायलाग्स कंसरनिंग नेचुरल रिलिजन।” वही 385-86. ⁴के. यू. लिंडरस्ट्रॉम लैंग, “हाउ इज़ ए प्रोटीन मेड?” *साइंटिफिक अमेरिकन* (सितम्बर 1953): 100-6. ⁵प्लेटो, *द वर्क्स ऑफ प्लेटो*, बुक 10, *लॉज़*, अनु. बी. जोएट (न्यूयॉर्क: डायल प्रैस, पृ. न.), 453. ⁶*इनसाइक्लोपीडिया अमेरिकाना*, 1965 सं., s.v. “Eclipse” by Eloise McCaskill. ⁷ह्यूम, 339. ⁸वही, 345. ⁹जॉन एच. मार्टिन, *साइंटिस्ट्स हू बिलीव* (एलिन, III.: डेविड सी. कुक पब्लिशिंग कं., 1963), 42-43.